

श्री रजा की दमोह में एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का कला केंद्र स्थापित करने की योजना है।

मैं चित्रों का पुजारी हूँ

सिटी रिपोर्टर, जबलपुर

मेरे लिए चित्रकारी एक पूजा है और मैं उसका पुजारी हूँ, इसलिए मैं हमेशा चित्रों को पूजता हूँ। रंगों को अपना संसार एवं चित्रों को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानने वाले अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार हैं एस्एस रजा। लगभग 50 वर्ष पूर्व फ्रांस में जाकर बस चुके श्री रजा ने जबलपुर आगमन पर पत्रकारों से एक खास बातचीत की। निजी कारणों से दमोह आए श्री रजा ने अपनी यात्रा के संबंध में कहा कि यह उनका देश के प्रति लगाव ही है जो उन्हें हर वर्ष यहां खींच लाता है। आज के दौर में चित्रकला के संबंध में उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में काफी परिवर्तन आ रहा है। कई ऐसे कलाकार हैं जो अपनी

कला की बोली लगवा रहे हैं, लेकिन मैं इसके पक्ष में नहीं हूँ। मंडला में जन्मे एवं दमोह तथा नागपुर से शिक्षा ग्रहण करने के कारण श्री रजा का इस क्षेत्र से विशेष लगाव है। अपने बचपन की याद ताजा करते हुए वे कहते हैं कि उस समय यदि कोई बच्चा चित्रकारी करता था तो उसे डांट ही मिला करती थी, लेकिन आज जब नन्हे हाथों में तुलिका आती है तो उसे उम्मीद से अधिक प्रोत्साहन मिलता है। अपनी माटी के प्रति प्रेम का ही कारण है कि वे दमोह में एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का कला केंद्र स्थापित करने जा रहे हैं। श्री रजा के जीवन से प्रभावित होकर लेखक अशोक वाजपेयी ने उन पर तनाव नामक एक किताब भी लिखी है।

